प्रवेशिका द्वितीय वर्ष

गायन - वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक : 125 (न्यूनतम 44)
क्रियात्मक : 75 न्यूनतम : 26 शास्त्र : 50 न्यूनतम : 18

शास्त्र :

अ) प्रथम वर्ष की परिभाषाओं की विस्तृत पुनरावृत्ति। निम्नलिखित विषयों का साधारण ज्ञान :- भारतीय संगीत की दो मुख्य पध्दतियाँ- उत्तर भारतीय एवं दक्षिण भारतीय (कर्नाटक) संगीत पध्दति। नाद की तीन विशेषताएँ (छोटा बड़ापन, ऊँचा नीचापन तथा जाति अथवा गुण) गान क्रिया अथवा वर्ण, (स्थायी, आरोही-अवरोही और संचारी) ध्वनि-नाद-श्रुति-स्वर की व्याख्याएँ तथा उनमें आपसी संबंध। स्वर (शुध्द एवं विकृत), सप्तक, आरोह-अवरोह, जनक एवं जन्यराग तथा उनसे संबंधित ग्रह, अंश, न्यास स्वर, पूर्वांग और उत्तरांग, पूर्व-उत्तर राग, शुध्द, छायालग, संकीर्ण राग, वक्र स्वर, मींड, कंपन, स्पर्श स्वर, गमक, घसीट इत्यादि। गीत के अवयव (स्थायी, अंतरा, संचारी तथा आभोग)।

गीत के प्रकार :- ध्रुपद, धमार, ख्याल, (विलंबित) तथा द्रुत भजन (वाद्य के लिए मसीदखानी तथा रजाखानी गत) जहां संभव हो पाठ्यक्रम के राग - तालों के उदाहरणों द्वारा विषय को स्पष्ट किया जाए।

(इस प्रश्नपत्रिका में १० अंक के प्रश्न वस्तुनिष्ठ (ऑब्जेक्टिव्ह) होंगे।)

आ) पं. विष्णु नारायण भातखंडे तथा पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर की स्वरलिपियों के चिन्हों की पहचान तथा सीखे हुए गीतों को इन लिपियों में लिखने का अभ्यास। प्रथम और द्वितीय वर्ष के सभी

रागों का पूर्ण विवरण - मेल (थाट), राग में लगनेवाले स्वर, वादी - संवादी, समय, पकड़, प्रारंभिक आलाप लिखना। इन रागों की समानता - विभिन्नता को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करना। लिखित स्वर समूह द्वारा राग पहचानना तथा पाठ्यक्रम के रागों में अलंकार (पल्टे) बनाना।

दोनो वर्षों के तालों को लिपिबध्द करना : मात्रा, सम, खाली, ताली, विभाग, ठेका आदि लिखने की विधि का ज्ञान होना चाहिए। इन तालों को ठाह (बराबर)तथा दुगुन की लय में लिखने का अभ्यास। साधारण आलाप तान तोड़ोंसहित बंदिशों/ गतों को स्वरलिपि में लिखने की क्षमता।

इ) पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर तथा स्वामी हरिदासजी की संक्षिप्त जीवनी और अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल इस संस्था का अल्प परिचय।

ई) वाद्य के विद्यार्थियों को अपने वाद्य के चित्र बनाकर उसके विभिन्न अंगो की जानकारी देना आवश्यक है।

क्रियात्मक :

अ) स्वर ज्ञान :

१) शुध्द स्वरों के गाने - बजाने तथा पहचानने में निपुणता। विकृत स्वरों का समुचित ज्ञान। चार शुध्द स्वरों के समूह तथा तीन स्वरों के समूह को (जिसमें एक या दो स्वर विकृत हों) गाना/बजाना तथा पहचानना। ऐसे स्वरसमूह पाठ्यक्रम के रागों पर आधारित होंगे।

२) पहले सीखे हुए अलंकारों का द्रुतगति में अभ्यास तथा निम्नलिखित छह नये अलंकारों का विभिन्न लयों में अभ्यास तथा रागों में उनका प्रयोग करने की क्षमता ।

(१) सागरेसा, रेमगरे .... सांधनीसां, नीपधनी, धमपध,

(२) सारेसाग, रेगरेम, गमगप ....सांनीसांध, नीधनीप, धपधम

(३) सारेग रेगसारे, रेगम गमरेग.......... सांनीध नीधसांनी,
नीधप धपनीध (रूपक ताल में)

(४) सारेगरेसा, रेगमगरे, ... सांनीधनीसां, नीधपधनी,
(झपताल में)

(५) सागगरे, रेममग, गपपम .... सांधधनी, नीपपध

(६) सारेगरेगऽ रेगमगमऽ .... सांनीधनीध, नीधपधप
(एकताल के वजनसे)

आ) राग ज्ञान :

१) प्रथम वर्ष के रागों की पुनरावृत्ति के साथ इस वर्ष यमन अथवा कल्याण और भूप राग के बड़े ख्याल/मसीतखानी गतें (केवल बंदिशे गाना/बजाना अपेक्षित है, विस्तार अपेक्षित नही है) इसके अतिरिक्त निम्नलिखित आठ राग सीखने हैं :-

(१) अल्हैया बिलावल, (२) वृंदावनी सारंग,
(३) भैरव, (४) बिहाग,
(५) केदार, (६) तिलक कामोद,
(७) आसावरी, (८) भैरवी।

२) इन रागों में आरोह - अवरोह, प्रारंभिक आलाप, तथा एक मध्य लय का ख्याल / रजाखानी गत सीखनी है।

३) इनमें से भैरवी छोड़कर अन्य ७ रागों में मध्य लय के ख्याल/ रजाखानी गत, आलाप, तान/ तोड़ों सहित १० मिनट तक गाने-बजाने की तैयारी।

४) इन आठ रागों में से किन्ही पांच रागों में एक धमार (दुगुन के साथ), एक तराना, सरगम गीत, एक लक्षण गीत तथा झपताल या रूपक में एक बंदिश - इस प्रकार अन्य गीत प्रकार सीखने हैं। सभी गीत प्रकार अलग - अलग रागों में होने चाहिए। वादन के लिए

रूपक, झपताल तथा धमार में तीन रचनाएँ। झाले के तीन प्रकार तथा पूछे गए एक राग में आलाप।

हार्मोनियम का प्रयोग केवल आधार स्वर (षड्ज, पंचम / मध्यम) के लिये ही किया जा सकता है।

५) मण्डल की प्रार्थना ''जय जगदीश हरे'' तथा एक भजन और एक लोकगीत सिखाए जाए। वादन के लिए एक लोक़धुन, कृंतन, घसीट, एवं जमजमा बजाने की क्षमता।

६) गाये/बजाए हुये आलापों द्वारा राग पहचानने की क्षमता।

इ) ताल़ लय ज्ञान :

१) तबल़े पर बजते हुए तालों को पहचानने का अभ्यास।

२) ठाह तथा दुगुन की लय हाथ से ताली देते हुए अंकों अथवा बोलों की सहायता से बोलना।

३) विलंबित एकताल, चौताल, धमार, रूपक और तीनताल हाथसे ताली देकर दुगुनमें बोलना।

अंकपत्रिका :

सूचना : *हर एक परीक्षार्थी की परीक्षा अलग-अलग लेना आवश्यक है। परीक्षार्थी को तानपूरा या हार्मोनियम में षड्ज/पंचम/मध्यम लगाकर ही गाना चाहिये। हर एक विद्यार्थी की परीक्षा के लिए 20 मिनट का समय निर्धारित किया गया है।*

यमन और भूपाली इन दोनों मे से एक विलंबित ख्याल की बंदिश/गत गाना/बजाना। : 5 अंक।

पूछे गए किसी एक राग में आलाप-तान के साथ बंदिश : 8 अंक।

इस वर्ष के अन्य राग में 2 आलापों के साथ बंदिश : 6 अंक।

तथा अन्य एक राग में 5 ताऩों/तोंड़ों के साथ बंदिश : 6 अंक।

कुल : 20 अंक।

धमार (वाद्य हो तो कोई गत या तालबद्ध अलंकार) ठाह तथा दुगुन में : 8 अंक ।

तराना/झाला तथा तीन ताल को छोड़कर अन्य ताल में बंदिश, इनमें से एक प्रकार : 5 अंक ।

इस वर्ष के दो अलंकार शुद्ध स्वर में : 6 अंक ।

तथा उन में से एक संपूर्ण जाति के राग में : 4 अंक ।

कुल 23 अंक ।

प्रथम वर्ष के दो रागों में प्रारंभिक राग विस्तार के साथ बंदिश : 10 अंक ।

इस वर्ष के किसी एक ताल का ठेका ठाह तथा दुगुन में : 5 अंक ।

ताल को समझकर बंदिश प्रारंभ करना : 4 अंक ।

कुल 9 अंक ।

राग पहचानने के लिए इस वर्ष के दो तथा प्र. वर्ष के दो रागों के स्वर समूहों का प्रयोग करें : 8 अंक ।

(कुल मौखिक : 75 अंक, लिखित : 50 अंक, सर्वयोग : 125 अंक)